

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2372 • उदयपुर, मंगलवार 22 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया



समाचार-जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें



सेवा-जगत्
मानवता का प्रतीक आपका अपना सेवा संस्थान



अंतरिक्ष में अध्ययन



अमरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने हाल ही तस्वीरें जारी की हैं। इनसे पता चला है कि नमूने जुटाते समय एस्टेरॉयड 'बेन्नू' की सतह को नुकसान पहुंचा है। एस्टेरॉयड की सतह पर दबाव से हल्का गड्ढा हो गया है।

नासा ने 2019 और 2020 में बेन्नू पर ओसिरिस-रेक्स अंतरिक्ष यान भेजा था। 2019 में बेन्नू की तस्वीर ली गई, जबकि 2020 में यहां से नमूने संग्रहित किए गए।

नमूने संग्रहण के बाद बेन्नू में आए परिवर्तन को जानने के लिए नासा ने 7 अप्रैल, 2021 को फिर अंतरिक्ष यान ओसिरिस-रेक्स भेजा। यान से गई बेन्नू की फोटो अब सामने आई है।

2023 में लौटेगा आसिरिस-रेक्स
ओसिरिस-रेक्स बेन्नू की सतह से

लगभग 1 किलो वजनी नमूने लेकर मई में रवाना होगा और 2023 में पृथ्वी पर लौटेगा। बेन्नू से पृथ्वी की दूरी लगभग 29.3 करोड़ किलोमीटर है। बेन्नू के नमूनों का अध्ययन कर वैज्ञानिक यह समझने की कोशिश में हैं कि सौर मंडल के ग्रह कैसे बने? अगर कोई एस्टेरॉयड पृथ्वी को खतरे में डालता है तो इससे कैसे बच सकते हैं?

रूस का मून मिशन इसी साल

रूस इस साल अक्टूबर में अपना मून मिशन लॉन्च करेगा। लूना 25 नाम के लैंडर को चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतारने की योजना है। वैज्ञानिक चांद की बर्फीली सतह के नीचे मौजूद पानी के अध्ययन की कोशिश करेंगे। जिससे मानव जीवन चांद पर आसानी से रह सके।



संस्थान में मनाई प्रताप जयंती

महाराणा प्रताप भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के ही नहीं अपितु 16वीं से 20 वीं शताब्दी तक एशिया एवं अफ्रीकी महाद्वीपों में भी राष्ट्रीय आन्दोलनों के प्रेरणास्रोत रहें हैं।

यह बात शनिवार को नारायण सेवा संस्थान में आयोजित प्रताप जयंती समारोह में मुख्य अतिथि पद से प्रमुख समाजसेवी तेजसिंह जी बान्सी ने कही। प्रमुख वक्ता इतिहासविद डॉ. गिरीशनाथ जी माथुर ने कहा कि महाराणा प्रताप ने जिस तरह एशिया के सर्वशक्तिमान शासक मुगल सम्राट अकबर को पराजय का स्वाद चखाया वह देश के स्वाभिमान एवं स्वतंत्रता के संघर्ष का स्वर्णिम अध्याय बन गया। संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन विष्णु जी शर्मा हितैषी ने किया।

डॉ. जी.एल. मेनारिया जी ने कहा कि महाराणा प्रताप सच्चे मायने में जननायक थे। मेवाड़ की स्वतंत्रता व स्वाभिमान की रक्षा के लिए उन्होंने राजसी वैभव त्याग कर अरावली की पहाड़ियों में आदिवासियों को साथ लेकर मुगल साम्राज्य के विरुद्ध लोहा लिया।

इससे पूर्व संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने अतिथियों का मेवाड़ी पाग एवं श्रीनाथ जी के उपरने से स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने संगोष्ठी के सहभागियों का महाराणा प्रताप का चित्र और हल्दीघाटी की मिट्टी भेंट की। आभार पलक जी अग्रवाल ने तथा संयोजन ऐश्वर्य जी त्रिवेदी ने किया। कार्यक्रम में दल्लाराम जी, भगवान प्रसाद जी गौड़ ने भी विचार व्यक्त किए।



एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते हैं! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई। संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए और ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।



संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुंचायी। संस्थान जरूरतमंदों के घर-घर भोजन, दवाई और ऑक्सीजन सिलेंडर की निःशुल्क सेवाएं दे रहा है। जिससे हजारों लोग रोज लाभान्वित हो रहे हैं।





नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर



कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ निःशुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा

अब तक निःशुल्क 298 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये



'घर - घर भोजन' सेवा

अब तक घर-घर निःशुल्क 66,544 भोजन पैकेट वितरित



कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक निःशुल्क 2881 कोरोना किट संक्रमितों को दिये



बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पिटल पहुँचाते संस्थान कर्मि अब तक 371 जन लाभान्वित



हैड्रोलिक बेड सेवा

178 जन को हैड्रोलिक बेड कराये उपलब्ध



निःशुल्क राशन सेवा

कोरोना प्रभावित 30,695 मजदूर परिवारों को राशन वितरण

हम तो इंसान हैं, दीमक भी जहाँ रहते हैं, उस स्थान को बहुत करीने से साफ रखते हैं। उनकी कॉलोनी के लाखों दीमकों की निजी जिम्मेदारी होती है कि वे अपने कचरे को विकेंद्रित कवक बगीचे में जमा करें जिससे वहाँ खाने योग्य कवक पैदा हो सके। इस तरीके से दीमक अपने कचरे को पोषक खाद्य पदार्थ में बदल लेते हैं। उनके यहाँ कोई कचरा खुले में नहीं होता जिससे उनकी सेहत को खतरा पैदा हो।

इंसान भी (अगर चाहे तो) ऐसा कर सकता है। वास्तव में वे करते रहे हैं। वैदिक काल से लेकर शहरी बसावट के शुरुआती दौर तक कचरा प्रबंधन उनकी आदत में शुमार था। 1970 से पहले शहरों और कस्बों से सटे गांवों के किसान उनके किचन से पैदा हुए कचरों को ले जाते थे और अपने खेतों में कंपोस्ट तैयार करते

अपनी आदतों को बदलना होगा

थे। यह स्वस्थ आदत दो चीजों के चलते खत्म हो गई।

एक तो प्लास्टिक युग की शुरुआत से लोग अपने किचन के कचरे में उसे फेंकना शुरू कर दिए। इससे ये कचरा किसानों के लिए अनुपयोगी हो गया। दूसरी वजह इस परंपरा के खात्मे की बनी, सरकार द्वारा उर्वरक पर भारी सब्सिडी देना। फार्म कंपोस्टिंग और गोबर से पौधे के जिस पोषक तत्व नाइट्रोजन की पूर्ति किसान करते रहे, अब वह उन्हें बिना तमाम जतन किए सहज उपलब्ध है।

हालांकि किसानों को तब किसी ने इस बात के लिए आगाह नहीं किया कि उन्हें उसके साथ कंपोस्ट का कार्बन डालना भी उतना ही जरूरी है। रासायनिक उर्वरकों के अति उपयोग से

जमीन की उत्पादकता गड़बड़ाई तो अब हमें अपने किए पर अफसोस जताना पड़ रहा है। अब हमें फिर कचरे से बनने वाले मृदा पोषक तत्वों की ओर निहारना पड़ रहा है।

इतना आगे बढ़ जाने के बाद क्या वापसी की जा सकती है? बिल्कुल, अगर हम अपने खाद्य कचरे में किसी चीज की मिलावट न करें तो सदियों से चली आ रही कंपोस्टिंग प्रणाली से फिर कचरे से सोना निकाल सकते हैं। कचरे में मिलावट से बचना बहुत आसान है।

अगर एक बार ऐसा करना शुरू कर दिया जाए तो आज सभी खाद्य पदार्थों गमलों, बगीचे का कचरा लाभदायक और कीमती बन जाए। बहुत से ऐसे परिवार हैं जो अपने घर की छोटी सी जगह में

रसायनमुक्त और स्वास्थ्यप्रद हरित सब्जियां उगा रहे हैं।

लोग अक्सर पूछते हैं कि हमारा देश कचरा मुक्त कैसे और कब तक होगा। ये तभी संभव है जब देश का प्रत्येक नागरिक इस बात की चिंता करने लगेगा कि उनके सार्वजनिक स्थल गंदे क्यों हैं? देश तभी कचरे से मुक्त होगा जब लोग अपने घर की तरह, अपने ड्राइंग रूम की तरह सार्वजनिक स्थलों को भी साफ रखना शुरू करेंगे।

जब हर व्यक्ति गैर जरूरी चीज सरेराह चलते सड़क, खाली प्लॉट में या नाले में नहीं फेंकेगा। हमारा देश तभी कचरा मुक्त होगा जब लोग इस मानसिकता से उबर जाएंगे कि फलाने ऐसा कर रहे हैं तो हम क्यों नहीं। ये बदलाव ही हमारे देश को स्वच्छ और देशवासियों को स्वस्थ बनाएगा।

सम्पादकीय

पशुता व मनुष्यता का विभेद करने के लिए कई सारे मापदण्ड हैं, इनमें से एक यह भी है कि खुद ही खुद के लिए ही करे या औरों के लिये भी करे। एक प्राचीन कहावत है— 'बाँट-चूँट ने खाणो, बैकुण्ठा में जाणो।' इसका आशय यही है कि हमें जो कुछ भी मिला है उसमें हमारे अकेले का पुरुषार्थ न भाग नहीं है।

एक समग्र परिणति है कि हमें कुछ उपलब्ध हुआ है। जैसे किसी ने धन कमाया। उस कमाई में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगियों, ग्राहकों, घरवालों, अन्य सेवादारों का भी योगदान है। जब सभी के योगदान से धन या कोई अन्य चीज मिली है तो फिर मेरे अकेले का स्वामित्व कैसे होगा ? भागीदारी सबकी ही है। यदि उनकी सहभागिता को नजर अंदाज करके अपनी ही मिल्कियत स्थापित कर लूँ तो क्या यह उन घटकों के प्रति धोखाधड़ी नहीं होगी?

निश्चित रूप से किसी के भी किसी भी प्रकार के निर्माण या उत्थान में कई चरणों में, कई लोगों का सहयोग होता है अतः सभी के प्रति अहोभाव तथा सभी को उस उपलब्धि का लाभ मिलना ही चाहिये। यही मानवीय गुण है कि वह श्रेय हो, वस्तु हो, शक्ति हो, जो भी हो उसे प्राप्त करने के बाद सभी में बाँटे भी।

कुछ काव्यमय

जाना है बैकुण्ठ तो,
खाओ मिलजुल बाँट।
मन विराट हो जायगा,
नहीं पड़ेगी गाँठ॥
आपस में बाँटी नहीं,
जो भी आई चीज।
सूख जायगा एक दिन,
प्रेम भाव का बीज॥
ज्यों बाँटो त्यों त्यों बढ़े,
सामग्री या प्यार।
अनजाने बन जायगा,
एक नया संसार॥
बाँट-बाँट खाया नहीं,
तो क्या है उपयोग।
दिन-दिन बढ़ता जायगा,
कंजूसी का रोग॥
जो भी हमको मिल गया,
माने उसे प्रसाद।
सबको पहले बाँटकर,
खायें सबके बाद॥

- वस्तीचन्द्र राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

हर समय अच्छा अवसर

भगवान बुद्ध उन दिनों अपरिग्रह में लोक शिक्षण कर रहे थे। अपव्यय और संग्रह की सर्पकुण्डली से लक्ष्मी को निकालने के लिए यह उपदेश समय की दुहरी आवश्यकता पूरी कर रहे थे। बहुतों ने अपना संग्रह परमार्थ के लिए बुद्ध विहारों को दान कर दिया। परन्तु एक धनाढ्य व्यक्ति अर्थवसु पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने अपने संग्रह से कानी-कोड़ी भी दान नहीं की। एक धनाढ्य की, यह कृपणता जन-जन की चर्चा का विषय बन गई।

अपने बच्चों के लिए भी वह धन खर्च न करता था। बच्चे भी दुःखी रहते, पर अर्थवसु मौन रहता।

सभी को उसका यह व्यवहार अटपटा लगता और अजीब व्यवहार



करता रहता था।

बहुत दिन बीत गये। नालन्दा विश्व-विद्यालय की नींव रखी गयी। निर्धनों को सुविधा प्रदान करना तात्कालिक श्रेय था परन्तु ज्ञान आलोक के अभाव में दरिद्रता से

सज्जनता का गुण

सज्जन व्यक्ति सदैव सकारात्मक गुणों से भरे होते हैं। वे हमेशा दूसरों का भला सोचते हैं। वे परहित हेतु कभी धन के लाभ-हानि की चिंता नहीं करते।

एक बार एक धनी व्यक्ति के पास एक निर्धन महिला पहुँची और उसने उसे यह कहते हुए पचास हजार रुपयों की याचना की कि उसका बेटा बहुत बीमार है और उसे बेटे के इलाज हेतु रुपयों की सख्त जरूरत है। सेठजी के मुनीम को महिला पर संदेह हुआ कि शायद महिला झूठ बोल रही है। मुनीम जी ने सेठजी से आग्रह किया कि पहले हम इस महिला की सच्चाई की जाँच करा लेते हैं, फिर रुपये देते हैं। सेठजी ने मुनीम जी की बात को अनदेखा कर दिया और मुनीम जी को रुपये देने हेतु आदेश दिया। मुनीम जी ने महिला को



तिजोरी से निकाल कर पचास हजार रुपये दे दिए और महिला वहाँ से चली गई।

कुछ दिन पश्चात् मुनीम जी दौड़कर सेठजी के पास आए और बोले, "सेठजी, मैंने कहा था ना कि वह महिला झूठी है और यह बात आज सत्य साबित हो गई। पुलिस आज उस

छुटकारा कैसे मिलेगा ? अर्थवसु कुछ ऐसा ही सोच रहे थे। जो संग्रह उन्होंने किसी को नहीं सौंपा आज उसके उपयोग का अवसर आया था। एक दिन लोगों ने सुना कि उन्होंने अपनी सारी सम्पदा दान कर दी।

तथागत बुद्ध इस आकस्मिक निर्णय पर चकित हुए। जब उन्होंने अर्थवसु को इस निर्णय के बारे में पूछा तो उन्होंने एक ही उत्तर दिया। सर्वोत्तम कार्य के निष्पादन के लिए ही मैं पणता अपनाते रहा।

मैं निष्ठुर नहीं था— उपयुक्त अवसर ही तलाश में था। कहीं हम भी इसी तरह "एक अच्छे अवसर का तो नहीं तलाश रहे हैं।"

आइये एक अच्छा अवसर आप का इन्तजार कर रहा है। ऐसा न हो कि हमें फिर अवसर न मिले।

—कैलाश 'मानव'

महिला को पचास हजार रुपयों सहित पकड़ कर थाने ले जा रही थी। बहुत खुशी की बात है कि हमें हमारे रुपये वापस मिल जाएँगे।" मुनीम जी की बात सुनकर सेठजी बोले, "मुनीम जी मेरे लिए भी वाकई में खुशी की बात है कि उस महिला का बेटा स्वस्थ, निरोगी और अच्छा है। मुझे मेरे पैसों की चिंता नहीं है।" कहने का तात्पर्य यह है कि परोपकारी व्यक्ति सदैव सकारात्मक रहते हैं। वे नकारात्मक बातों को स्वीकार नहीं करते। ऐसे लोग धन के गुम हो जाने और मिल जाने पर क्रमशः दुःखी और सुखी नहीं होते। वे हर परिस्थिति में सदैव तटस्थ रहते हैं। दूसरों का भला चाहने वाला व्यक्ति कभी भी अपने ही हित के बारे में नहीं सोचता।

— सेवक प्रशान्त भैया

गिनती क्यों करूँ ?

एक शहर में सत्संग भवन का निर्माण हो रहा था। भवन की सेवा चल रही थी। निर्माण कार्य का निरीक्षण करने पर एक महापुरुष वहाँ आये हुये थे। कुछ दिन रहने के बाद उनका वापसी का समय आ गया। उस महापुरुष ने सोचा कि सन्त को नमस्कार कर लूँ। उसने अपनी जेब में हाथ डाला और जितनी भी माया उसके हाथ में आई उसने नमस्कार कर दे दी। महापुरुष ने कहा कि आप नमस्कार करने से पहले गिनती तो कर लेते। उसने कहा कि वो इसी शहर का रहने वाला है। मेरी आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी। महात्माओं ने कहा कि आप संगत में आया करो। दास बात मानकर संगत में आने लगा और अपनी सामर्थ्य अनुसार सेवा करने लगा। एक दिन महापुरुष ने कहा कि यह जमीन खाली पड़ी है, इसे खरीद लो। दास ने जैसे-तैसे वह जमीन खरीद ली। दास को उस जमीन से काफी फायदा हुआ। उसके बाद तो बहुत कुछ मिलता गया। अब प्रभु कृपा से किसी चीज की कमी नहीं है। सन्त जी, जब निरंकार-प्रभु मुझे बिना गिने सब कुछ दे रहा है तो फिर मैं भी सेवा करते समय गिनती क्यों करूँ ?

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित—झीनी-झीनी रोशनी से)

स्त्री का डर बढ़ते दबाव से खत्म हो गया, उसने प्रतिकार करते हुए कहा कि मेरे से और रुका नहीं जाता, अब तो मैं तेरे सामने ही हाथ-मुण्डा धोती हूँ। संयोग से इसी वक्त कैलाश वहाँ पहुंच गया। सारी स्थिति जान स्त्री को शौच करने जाने दिया तथा गुजराती कार्यकर्ता को समझाया कि मेवाड़ी में इस उक्ति का अर्थ क्या है।

राजमल का कैलाश के जीवन पर गहरा प्रभाव था। वे समय समय पर कैलाश को जीवन की गहराइयों और व्यावहारिकता के बारे में समझाते रहते।

सेवा का इतना कार्य करने और प्रशंसा होने के बावजूद दर्प जैसा अवगुण उन्हें छू तक नहीं गया था। कैलाश को उन्होंने एक किस्सा

सुनाया—एक स्थान पर ढेर सारे सूखे चने पड़े थे।

इनमें से एक चना किसी तरह पानी के कटोरे में गिर पड़ा। पानी के प्रभाव से चना फूल कर बड़ा हो गया, उसने बाकी चनों को भी कहा कि आओ, तुम लोग भी फूल कर बड़े हो जाओ। कई चने उसकी देखा-देखी फूल कर बड़े हो गए मगर एक चना टस से मस नहीं हुआ।

उसने कहा— मैं तो कच्चा ही भला, तुम लोग फूले हो तो सड़ोगे भी, मैं छोटा ही रह गया तो क्या किसान मुझे बोएगा तो मुझे एक चने से वो सौ चने पैदा करेगा।

कैलाश को इस छोटी सी कथा ने इतना प्रभावित किया कि उसने ठान लिया कि जीवन में कभी अहंकार नहीं करना।

अंश-41

टीका लगवाने से पहले और बाद में बरतें कुछ सावधानियां

कोरोना का टीका लगवाने के बाद मामूली साइड-इफेक्ट्स देखे जा रहे हैं, जो सामान्य बात है। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐहतियात के तौर पर वैक्सीन लगवाने से पहले और बाद में कुछ सावधानियां बरतने से ऐसी परेशानियों से बचा जा सकता है। टीका लगवाने से पहले रखें ध्यान—



- 1 कोरोना के उपचार के दौरान अगर ब्लड प्लाज्मा या मोनोक्लोनल एंटीबॉडी दी गई है या जो लोग डेढ़ महीने में कोरोना से संक्रमित हुए हैं, उन्हें वैक्सीन की डोज नहीं लेने की सलाह दी जाती है।
- 2 डायबिटीज, ब्लडप्रेसर, कैंसर मरीजों, कीमोथेरेपी वाले लोगों को दवा और ड्रग्स से एलर्जी है तो चिकित्सक से परामर्श करें। वैक्सीनेशन से पहले ब्लड टेस्ट रिएक्टिव प्रोटीन या इम्युनोग्लोबुलिन के स्तर की पूरी जांच करा लें।
- 3 वैक्सीनेशन से पहले जितना संभव हो उतना आराम करने की कोशिश करें। वैक्सीन जब लगवाने जाएं, तब अच्छी तरह और भरपेट भोजन खाना चाहिए। अगर किसी तरह की दवाई डॉक्टर द्वारा आपको सुझाई गई हो तो वह लेनी चाहिए।

टीके के बाद भी रहें सावधान

- वैक्सीन लगवाने के बाद आधे घंटे तक सेंटर पर ही रुके। किसी तरह की परेशानी हो तो परामर्श लें। वैक्सीनेशन के बाद शरीर के इंजेक्शन लगने वाले हिस्से में दर्द, बुखार, ठंड लगने व थकान जैसे लक्षण सामान्य हैं।
- वैक्सीनेशन के बाद भी यह न मानें कि फिर से इस बीमारी की चपेट में नहीं आएं। वैक्सीन के बाद शरीर में इम्युनिटी के निर्माण में कुछ हदों का समय लगता है।
- इसे लगवाने के बाद भी पब्लिक प्लेस पर मास्क का इस्तेमाल जरूर करें। हाथ धोते रहें। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें। खांसी-छीक आने पर मुंह पर रुमाल रखें। यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनाएँ यादगार.. जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नम)	सहयोग राशि (तीन नम)	सहयोग राशि (पाँच नम)	सहयोग राशि (ग्यारह नम)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशास्त्री	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो. नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अनुभव अमृतम्

बाबूजी को कहा लाईन में खड़ा कर रहे हो ठीक है। पर आप 300/- रुपया तो ले लो। मैं घर से आया हूँ। मेरे को रात को नींद नहीं आयेगी। आपके महिने भर की कमाई भी 300/- रुपये नहीं है। आपको 208/- रुपये महिना वेतन मिलता है। कहाँ से भुगतोगे बाल-बच्चों को क्या खिलाओगे? पास वाले बाबूजी ने 300/- रुपये लेकर के गल्ले (पेटी) में रख दिये।



अन्तरमन में सदभावों की, पावन गंगा जब बहती। पाप-पंक की कलुषित रेखा, नहीं एक क्षण को रहती।।

मैंने कहा इनको धन्यवाद दो, आभार प्रकट करो। इनको बुलाया अन्दर। मैंने कहा- भाईसाहब प्रणाम है- आपको। आपका बड़ा दिल है, आप 300/- रुपये लेकर के आये हो। दूसरा कोई होता तो सोचता चलो 300/- रुपया बच गया। मैं क्या करूँ? बाबू भूल गया तो वो जाने। बोले नहीं बाबूजी नहीं। अन्दर के मन ने स्वीकार नहीं किया। क्या करना है? उन बाबूजी को प्रणाम किया। उनका आभार प्रकट किया। ऐसे ही एक बार एक डॉ. साहब आये काउन्टर पर बोले दो दिन से पोस्टमैन रजिस्ट्री ला रहे। मैं घर पर मिलता नहीं हूँ। अकेला हूँ। मेरी फेमिली यहाँ नहीं है, मैं हॉस्पिटल में चला जाता हूँ- ड्यूटी पर। इधर घर पर ताला मिलता है। कहीं ऐसा ना हो कि वो रजिस्ट्री वापस भेजे दे। नोट फाउन्ड करके। आप कृपा करके वो रजिस्ट्री मेरे को दे दीजिए। रजिस्ट्री बाबू ने कहा नहीं-नहीं हम नहीं जानते आपको। रजिस्ट्री आपके घर कल भेज देंगे। आपको घर पर ही रुकना होगा। बोले साहब- मैं डॉ. हूँ साहब। अरे आप डॉ. हो तो क्या हो गया? मेरा डॉ. से कोई काम नहीं पड़ता। मेरा शरीर स्वस्थ है। मैंने गोली भी नहीं ली आज तक। मेरे को क्या डॉक्टर का रौब बता रहे हो? आप थोड़ा बीमार होने लगा। मैंने सोचा इन बाबूजी की मदद करो। मानवता के नाते उस समय आधार कार्ड भी नहीं थे।

सेवा ईश्वरीय उपहार- 168 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम

1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाइन साईट पर भी उपलब्ध है www.narayanseva.org, www.mankijeet.com : kailashmanav